

for online use only

वट वृक्षा 4

Harbour Press
INTERNATIONAL

गुंजन वाही बजाज
एम॰ए॰ (हिंदी), एम॰एड॰,
डॉ॰ प्रीति ‘सागर’
एम॰ए॰, पी॰एच॰डी॰

Harbour Press
INTERNATIONAL

for online use only

for online use only



Administrative & Production Offices

Regd. Office

418, The Summit Business Bay Omkar, Near WEH Metro Station, Andheri (East), Mumbai-400 093
+91-22-20884082

O.S. Office

37 Maple Avenue, Whitefield Manchester M457EP, United Kingdom

Gulf Office

F/05, 1st Floor, Souq Al Fahidi, Meena Bazar, P.O. Box # 62179, Bur Dubai - UAE

Delhi Office

4715-16, 4697/5, 21-A, 1st floor, Dayanand Road, Daryaganj, New Delhi-110002 • +91-11-41004082
delhi@harbourpress.com

Branches

Ahmedabad: 8,9,10, Shantam Avenue, Gurukul Road, Memnagar, Ahmedabad, Gujarat-380052 • +91-079-48484082

ahmedabad@harbourpress.com

Goa: D-2/12-A, Sancoale Industrial Estate, Zuari Nagar, Goa-403726

Jaipur: Office No. 529, 5th Floor, Jaipur Center, Tonk Road, Jaipur, Rajasthan-302018 • +91-9326907511

jaipur@harbourpress.com

Surat: 260/2-A/1, Gadia Public Weigh Bridge Compound, Main Road, GIDC Pandesara Main Road,
Surat-394221 • +91-9925836888

Vapi: 101-102, Krishna Complex, Above Ramu's Open House, Gunjan, Vapi,
Gujarat-396191 • +91- 9326907528

Sales & Support Centers

Bengaluru, Chandigarh, Chennai, Hyderabad, Indore,
Jalandhar, Kolkata, Lucknow, Nagpur, Pune, Shimla.

New Edition

Typeset By



Printed By

For further information about the products from Harbour Press
log on to www.harbourpress.com or email to info@harbourpress.com

www.facebook.com/harbourpress www.instagram.com/harbourpress www.twitter.com/harbourpress



© Author

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, without the prior permission in writing of Harbour Press, or as expressly permitted by law, by license or under terms agreed with the appropriate reprographics rights organisation. Enquiries concerning reproduction outside the scope of the above should be sent to the Rights Department, Harbour Press.

All disputes subject to Mumbai jurisdiction



for online use only



शिक्षा एक ऐसा दीपक है जो व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। यह प्रत्येक बालक का जन्मसिद्ध अधिकार है। बच्चों में सुनने-बोलने, पढ़ने तथा लिखने की क्षमता के साथ-साथ उनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा पर आधारित नवीन शृंखला 'वट वृक्ष' हिंदी पाठ्यपुस्तक को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में कहानी, कविता, आत्मकथा आदि अनेक विधाओं का समावेश किया गया है, जिनके द्वारा बच्चे भाषा के सभी आयामों से अवगत होंगे। इन पाठों के रचनाकार कई श्रेष्ठ साहित्यकार हैं। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे हिंदी के उच्च कोटि के साहित्य और साहित्यकारों से अवगत होंगे।

प्रस्तुत शृंखला की सभी पुस्तकों के पाठ वर्तमान समय तथा आस-पास के जीवन से संबंधित हैं। विषयवस्तु में सरलता, सहजता तथा रोचकता है। आकर्षक चित्रों के द्वारा पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। विविध अभ्यास कार्यों के द्वारा बच्चों के मानसिक और बौद्धिक विकास पर विशेष बल दिया गया है।

अनुभवी अध्यापक-अध्यापिकाओं से अनुरोध है कि वे हमें अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराते रहें, जिससे अगले संस्करण को हम अधिक उपयोगी बना पाएँ।



- प्रकाशक

for online use only

विषय-सूची

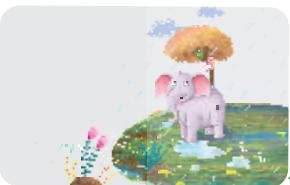
1

काँटों में राह बनाते हैं



7

11



2

पेड़ का घमंड



18

पेड़

(केवल पढ़ने के लिए)

19



3

पक्षी-विहार

4

जल की उपयोगिता



27

33



5

एक बूँद



38

बडोदरा

(केवल पढ़ने के लिए)



39

यक्ष-युधिष्ठिर संवाद



बीरबल की तीरदाजी



47



52

(केवल पढ़ने के लिए)



संतुलित भोजन, स्वस्थ जीवन



53



61

हम कुछ करके दिखलाएँगे



विक्रम साराभाई

(केवल पढ़ने के लिए)



67



68

प्रेरक व्यक्तित्व





दुर्गा पूजा उत्सव



75

82



मन का वहम



90



(केवल पढ़ने के लिए)



89

डाक टिकट की कहानी उसी की ज़बानी

आओ, नया समाज बनाएँ

13

95



95



मॉनीटर



काँटों में राह बनाते हैं

पाठ-प्रवेश

प्रस्तुत कविता में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने व्यक्ति को उसके अदम्य साहस और शक्ति से परिचित कराया है, जिसके द्वारा हम राह में आने वाली विपत्तियों एवं विघ्नों पर विजय पा सकते हैं।

सच है, **विपत्ति** जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं।
काँटों में राह बनाते हैं॥

है कौन **विघ्न** ऐसा जग में
टिक सके आदमी के **मग** में,
खम ठोंक **ठेलता** है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़े,
मानव जब ज़ोर लगाता है।
पथर पानी बन जाता है॥

गुण बड़े एक से एक **प्रखर**
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो
वर्तिका बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है।
रोशनी नहीं वह पाता है।





क्या सीखा



अपने भीतर की शक्ति का सदुपयोग करना, मुसीबतों से न घबराना।



शब्दार्थ (Word Meaning)

विपत्ति	— मुसीबत
नर	— मनुष्य
मग	— रास्ता
सूरमा	— बहादुर
वर्तिका	— दीपक की बाती

विज्ञ	— बाधा, अड़चन
कायर	— डरपोक
प्रखर	— तीव्र
ठेलना	— धकेलना



मौखिक

दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए।

- (क) विपत्ति किसको दहलाती है?
- (ख) कैसे लोग संकट के समय विचलित नहीं होते हैं?
- (ग) पर्वत के भी पाँव कब उखड़ जाते हैं?

लेखनी

1. दिए गए प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

- (क) आदमी के मार्ग में क्या नहीं ठहर सकते?
-

- (ख) पत्थर भी पानी कब बन जाता है?
-



(ग) मानव के अंदर कौन-से गुण छिपे हैं?

.....

(घ) कवि ने सूरमा की क्या पहचान बताई है?

.....

2. प्रसंग-सरलार्थ कीजिए।

(क) सच है, विपत्ति जब आती है

.....

कायर को ही दहलाती है,

.....

सूरमा नहीं विचलित होते

.....

क्षण एक नहीं धीरज खोते,

.....

(ख) गुण बड़े एक से एक प्रखर

.....

हैं छिपे मानवों के भीतर,

.....

मेंहदी में जैसे लाली हो

.....

वर्तिका बीच उजियाली हो,

.....

3. श्रुतलेख

विपत्ति, विचलित, विघ्न, प्रखर, मेंहदी, वर्तिका, पर्वत।

जीवन-मूल्य

हमें भी अपने जीवन में आने वाली विपत्तियों का डटकर सामना करना चाहिए, ताकि हम भी अपने जीवन में विजय पा सकें। क्या आप इस विचार से सहमत हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित संयुक्ताक्षरों से दो-दो शब्द बनाइए।

(क) व् + य = व्य

(ख) न् + य = न्य

(ग) च् + छ = च्छ



(घ) द् + य = द्य

2. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखिए।

- (क) सड़क में मत भागो। —
- (ख) दीवार पर नहीं थूको। —
- (ग) कृपया करके पानी पी लो। —
- (घ) वह बाजार गए। —

3. विलोम शब्द लिखिए।

- | | |
|------------------|-------------------|
| (क) सच x | (ख) कायर x |
| (ग) खोना x | (घ) गुण x |
| (ड) मानव x | (च) रोशनी x |

मन की बात

‘सच है, विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है।’ इस पंक्ति के माध्यम से कविता में व्यक्त कवि के विचार कक्षा में सबको बताइए।

हँसते-गाते

रामधारी सिंह ‘दिनकर’ की अन्य कविताएँ पढ़कर देखिए। क्या उनमें भी इसी कविता के समान विचार हैं?



पेड़ का घमंड

पाठ-प्रवेश

घमंड करने का परिणाम सदा बुरा होता है। घमंड करने के कारण पेड़ के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसके साथ क्या बुरा हुआ? आइए, पाठ पढ़कर जानें।

किसी जंगल में एक विशाल पेड़ था। उसका तना बहुत मोटा और मज़बूत था। पेड़ की **अनगिनत** छोटी-बड़ी **शाखाएँ** थीं, जिन पर बहुत-से पक्षी और जानवर रहते थे।

एक बार जंगल और उसके आसपास बड़े ज़ोर की बारिश हुई। दिन-रात खूब पानी बरसा, जिससे जंगल में बाढ़ आ गई। अपनी जान बचाने के लिए बहुत-से पशु-पक्षियों ने पेड़ की शरण ली।

तीन-चार दिनों तक जानवर पेड़ के नीचे ही छिपे रहे। पानी कुछ कम हुआ, तो एक-एक करके सभी ने पेड़ से विदा ली और अपने-अपने रास्ते चले गए।

इस बात पर पेड़ को घमंड हो गया। उसने मन-ही-मन सोचा— ‘अगर आज मैंने इन पशु-पक्षियों की मदद न की होती, तो इनकी मृत्यु निश्चित थी।’

घमंड की वजह से पेड़ अब किसी से सीधे मुँह बात नहीं करता था। यदि कोई पेड़ की शरण लेता, तो उसे ताना देकर





भगा देता।

“पेड़ भैया, हमें बैठने दो। तुम हमें डालों पर नहीं रहने दोगे, तो सोचो हम कहाँ जाएँगे?”
पशु-पक्षी कहते।

“क्यों, मैंने क्या तुम्हारा ठेका ले रखा है! बरसों से तुम लोग मुझ पर रहते आए हो, बदले में आज तक मुझे क्या मिला? तुम उछल-कूद मचाकर मेरी डालियाँ तोड़ देते हो। ये पक्षी बीट करके मेरे पूरे शरीर को गंदा कर देते हैं। इतना सहने पर मुझे क्या लाभ हुआ?” पेड़ बोला।

“लगता है, तुम्हें किसी ने बहका दिया है। इतने स्वार्थी मत बनो। हमें अपने साथ रहने दो।” जानवरों ने विनती की, पर पेड़ ने उनकी एक न सुनी। उन्हें मजबूर होकर वहाँ से जाना पड़ा। थोड़ी ही देर में पूरा पेड़ खाली हो गया।

“तुम शायद नहीं जानते, आज तुम हमारे काम आ रहे हो। हो सकता है, कल तुम्हें हमारी मदद की ज़रूरत पड़ जाए।” टिंकू हाथी ने पेड़ को समझाया, तो उसने ठहाका लगाया।

“भला, तुम लोग मेरे क्या काम आओगे! एक भी उदाहरण बता दो, जब मुझे तुम्हारी मदद की आवश्यकता पड़ी हो?” पेड़ अपनी तारीफ़ करता हुआ बोला। बेचारा टिंकू चुपचाप चला गया।

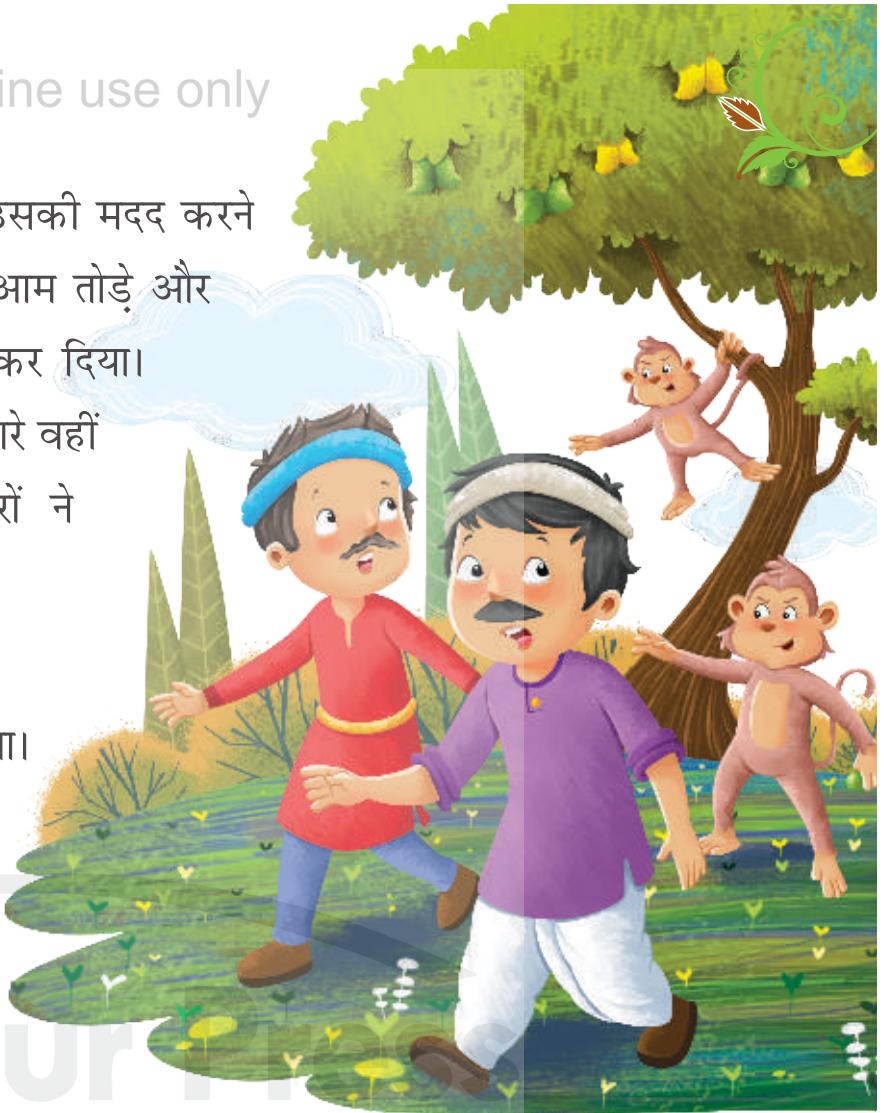
एक दिन न जाने कैसे जंगल में आग लग गई। देखते-ही-देखते आग चारों तरफ़ फैलने लगी। टिंकू ने खतरा भाँपकर अपने साथी हाथियों को इकट्ठा किया। उन सबने तालाब से अपनी सूँड़ में पानी भरकर आग पर डालना शुरू किया। वक्त पर पानी डालने से आग फैलने से पहले ही काबू में आ गई। इस घटना से भी उस विशाल पेड़ ने कोई सबक नहीं सीखा कि यदि टिंकू आग को न रोकता, तो वह जलकर भस्म हो जाता। पेड़ का घमंड ज्यों-का-त्यों बना रहा।

एक दिन लकड़ी काटने वाले तस्कर जंगल में आए। वे अपने साथ बड़े-बड़े आरे लेकर आए थे। उनकी नज़र मोटे तने वाले पेड़ पर पड़ी, तो लकड़ी के लालच में वे उसे काटने लगे।

पेड़ अपना तना कटता देख घबरा उठा। “मुझे मत काटो! रुको, मुझे मत काटो... बचाओ-बचाओ!...” वह मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगा। पहली बार उसे अपने कमज़ोर और असहाय होने का अहसास हुआ। चाहकर भी वह उन तस्करों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था।

जानवरों को पेड़ पर दया आ गई और वे उसकी मदद करने को तैयार हो गए। बंदरों ने पेड़ से कच्चे आम तोड़े और तस्करों पर निशाना लगाकर मारना शुरू कर दिया। इस आक्रमण से वे घबरा गए और अपने आरे वहाँ पर छोड़कर भाग निकले। सभी जानवरों ने मिलकर उन्हें जंगल से बाहर **खदेड़** दिया।

इस घटना ने घमंडी पेड़ की आँखें खोल दीं। उसे अपनी भूल का अहसास हो गया। पेड़ में आए बदलाव से सभी पशु-पक्षी बेहद खुश थे। विशाल पेड़ फिर से **गुलजार** हो गया। सब हिल-मिलकर प्रेमपूर्वक रहने लगे।



क्या सीखा



हमें कभी घमंड नहीं करना चाहिए।



शब्दार्थ (Word Meaning)

अनगिनत	— जिसे गिना न जा सके
मजबूर	— विवश
सबक	— सीख, पाठ
स्वार्थी	— मतलबी
खदेड़ना	— भगाना

शाखा	— डाली
असहाय	— बेसहारा
अहसास	— अनुभव
भस्म	— राख
गुलजार	— आनंद से भरा



अभ्यास

मौखिक

दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए।

- (क) पेड़ का तना कैसा था?
- (ख) पेड़ किस वजह से पक्षियों से सीधे मुँह बात नहीं करता था?
- (ग) पेड़ को कौन काटने लगा था?
- (घ) पेड़ क्या देखकर घबरा गया?

लेखनी

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- (क) जंगल में बाढ़ कैसे आ गई?

.....
.....

- (ख) पेड़ को घमंड क्यों हो गया था?

.....
.....

- (ग) आग बुझाने के लिए टिंकू हाथी ने क्या किया?

.....
.....

- (घ) बंदरों ने तस्करों को कैसे भगाया?

.....
.....



2. सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए।

(क) तीन-चार दिनों तक जानवर कहाँ बैठे रहे?

(अ) पेड़ पर

(ब) नदी के किनारे

(स) गुफा में

(द) पहाड़ पर

(ख) आक्रमण से कौन घबरा गए?

(अ) पशु

(ब) पक्षी

(स) तस्कर

(द) इनमें से कोई नहीं

(ग) पेड़ की अनगिनत छोटी-बड़ी—

(अ) शाखाएँ थीं

(ब) डालें थीं

(स) ये दोनों

(द) इनमें से कोई नहीं

3. कहानी के अनुसार वाक्यों को उचित क्रम 1, 2, 3, 4, 5 दीजिए।

(क) जानवरों ने विनती की पर पेड़ ने उनकी एक न सुनी।

(ख) पेड़ को घमंड हो गया।

(ग) यदि टिंकू आग को न रोकता, तो वह जलकर भस्म हो जाता।

(घ) एक बार जंगल और उसके आसपास बड़े ज़ोर की बारिश हुई।

(ङ) टिंकू हाथी ने पेड़ को समझाया, तो उसने ठहाका लगाया।

4. श्रुतलेख

स्वार्थी, उदाहरण, इकट्ठा, निश्चित, अहसास, आक्रमण, गुलज़ार।

जीवन-मूल्य

पेड़ ने घमंड किया और पछताया। घमंड की तरह हमें अन्य किन-किन बुरी बातों से बचना चाहिए?



भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव या तत्सम रूप लिखिए।

- | | | | | | |
|-----------|---|-------|-----------|---|-------|
| (क) दही | — | | (ख) काम | — | |
| (ग) प्रथम | — | | (घ) सच | — | |
| (ड) ग्राम | — | | (च) सूर्य | — | |

2. दिए गए शब्दों को जोड़कर यौगिक शब्द बनाइए।

- | | | | | |
|------------|---|-------|---|-------|
| (क) रेल | + | गाड़ी | — | |
| (ख) स्नान | + | घर | — | |
| (ग) मेघ | + | दूत | — | |
| (घ) विद्या | + | आलय | — | |

3. वाक्य बनाइए।

- | | | |
|-----------|---|-------|
| (क) घर | — | |
| (ख) प्रथम | — | |
| (ग) अवसर | — | |
| (घ) किसान | — | |

मन की बात

यदि पशु-पक्षी तस्करों को न भगाते तो बड़ा पेड़ कट जाता। जंगल में और क्या-क्या होता? सोचिए।

हँसते-गाते

‘पेड़ का घमंड’ कहानी को अपने शब्दों में लिखिए।

for online use only



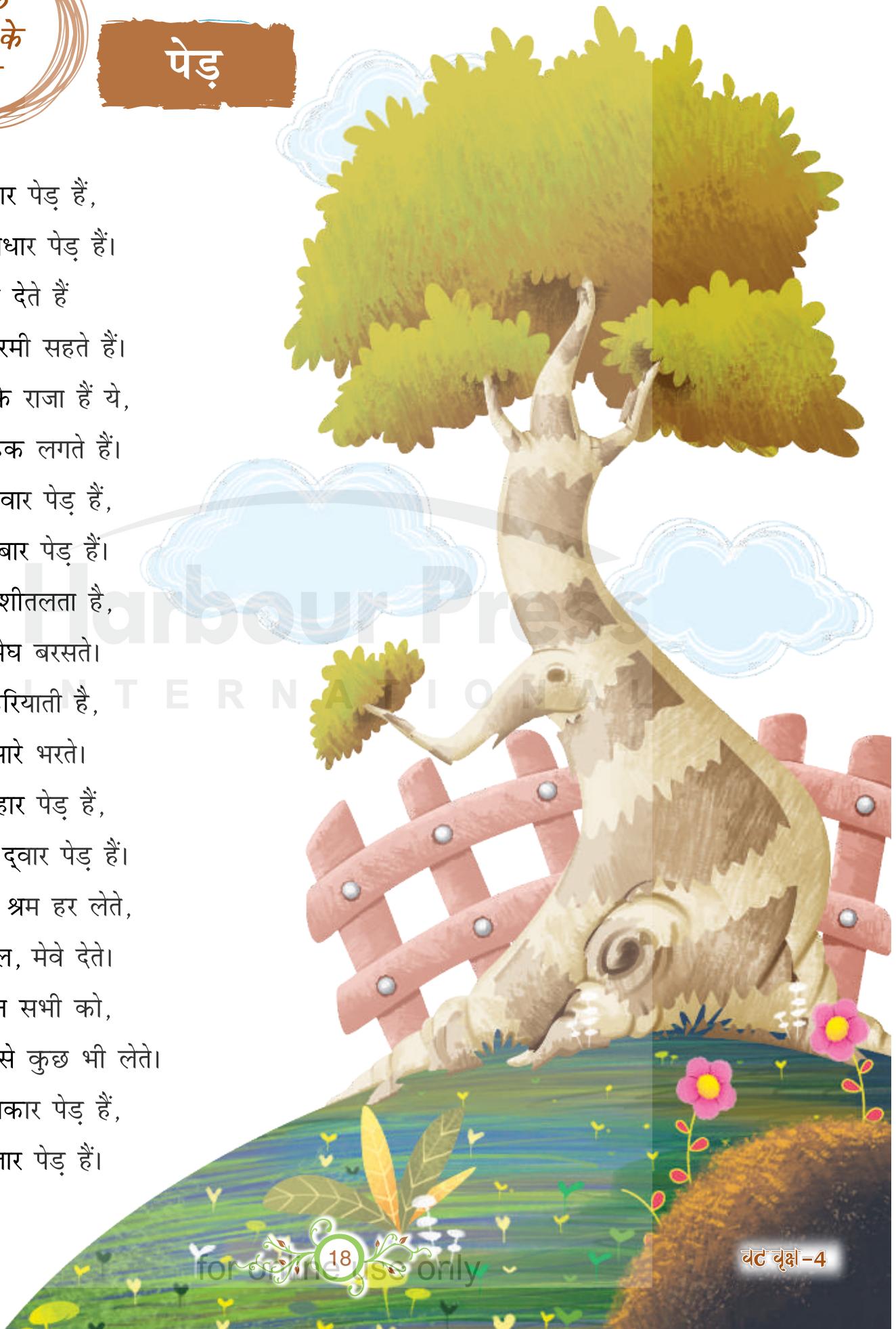
Harbour Press

INTERNATIONAL

केवल
पढ़ने के
लिए

पेड़

धरती के शृंगार पेड़ हैं,
जीवन का आधार पेड़ हैं।
पेड़ हमें छाया देते हैं
स्वयं शीत, गरमी सहते हैं।
बिना मुकुट के राजा हैं ये,
कितने मनमोहक लगते हैं।
जंगल के परिवार पेड़ हैं,
पंछी के घर-बार पेड़ हैं।
जहाँ पेड़ हैं, शीतलता है,
शीतलता से मेघ बरसते।
सूखी धरती हरियाती है,
ताल-तलैया सारे भरते।
धरती के उपहार पेड़ हैं,
खुशहाली के द्वार पेड़ हैं।
स्वस्थ बनाते, श्रम हर लेते,
हमें फूल, फल, मेवे देते।
करते हैं संपन्न सभी को,
पर न किसी से कुछ भी लेते।
करते नित उपकार पेड़ हैं,
सेवा के अवतार पेड़ हैं।





पक्षी-विहार

पाठ-प्रवेश

इस पाठ के माध्यम से प्राकृतिक वातावरण के बारे में जानकारी दी गई है। पक्षियों एवं पेड़-पौधों के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है।

(पक्षी-विहार का एक दृश्य। कई पक्षी पेड़ों पर बैठे हैं, तो कई पक्षी पानी में कलरव कर रहे हैं। यहाँ भ्रमण करने के लिए धवल और गरिमा अपने दादा जी के साथ आए हैं। वे आपस में बातें कर रहे हैं।)

धवल — देखिए दादा जी! चारों ओर कितनी हरियाली है!

गरिमा — यहाँ का वातावरण कितना सुखद है! मैं तो बहुत खुश हूँ।

दादा जी — बच्चो! हम घूमते तो बाजार में भी हैं, पर प्राकृतिक वातावरण में घूमना अलग ही किस्म का आनंद देता है।

गरिमा — लेकिन मैं तो जंगल में आने से डर रही थी, सोचती थी कि वहाँ तो डरावने पशु-पक्षी होते होंगे।

दादा जी — यहाँ आकर डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। यहाँ पशु-पक्षी सभी अपनी-अपनी मस्ती में विचरण करते हैं।

धवल — हाँ, दादा जी! ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। वह देखो, उस वृक्ष पर सफेद पक्षियों का जो





जोड़ा बैठा है, वैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा। लंबी-लंबी टाँगें और पैनी चोंच।

दादा जी – धवल! ये विदेशी पक्षी हैं। इन्हें ‘साइबेरियन क्रेन’ (सारस) कहते हैं। तुम इनकी ओर ध्यान से देखो, इनकी गरदन अन्य पक्षियों की अपेक्षा अधिक लंबी है।

गरिमा – दादा जी! क्या पक्षी भी विदेशी होते हैं?

दादा जी – क्यों नहीं! जैसे मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विदेश जाते रहते हैं, उसी प्रकार पक्षी भी अनुकूल ऋतुवाले स्थानों पर आते-जाते रहते हैं।

गरिमा – समझ गई दादा जी। अच्छा यह तो बताइए कि हमारे यहाँ कहाँ-कहाँ से पक्षी आते हैं और क्यों?

दादा जी – साइबेरिया से प्रतिवर्ष सारस आते हैं। इनको नम जलवायु की आवश्यकता होती है। जब इनके देश में ऐसी जलवायु नहीं मिलती, तब वे यहाँ आ जाते हैं। पानी के बीच उगे पेड़ों पर अंडे देते हैं, जहाँ वे सुरक्षित रहते हैं।

धवल – दादा जी! यह कैसे पता चलता है कि कोई पक्षी साइबेरिया से आया है या अन्य किसी देश से?

दादा जी – यह विशेषज्ञ बताते हैं। वे इन पक्षियों की आदतों, स्वभाव और आवागमन का





अध्ययन करते हैं। वे पक्षियों के पैरों में रबड़ का छल्ला बाँध देते हैं। इससे उनकी पहचान होती है तथा आवागमन का अध्ययन किया जाता है।

गरिमा – लोग कहते हैं कि पहले टुंड्रा और ऑस्ट्रेलिया से भी हमारे यहाँ हजारों पक्षी आते थे, मगर अब उनका आना बहुत कम हो गया है। ऐसा क्यों?

दादा जी – तुम देख रही हो न, अब जंगल कम होते जा रहे हैं। जब जंगल और पानी ही नहीं होगा, तो भला पक्षी ठहरेंगे कहाँ? इसी जगह पहले **सघन** जंगल था। खूब वर्षा होती थी। खूब पक्षी आते थे।

गरिमा – दादा जी! ये जंगल कम क्यों हो रहे हैं?

दादा जी – लोग अपने **स्वार्थ** के लिए इन्हें अंधाधुंध काट रहे हैं। वे भूल जाते हैं कि वनों की **समृद्धि** ही मनुष्य की समृद्धि है। वे नए वृक्ष लगाने की कोशिश भी नहीं करते।

धवल – दादा जी! इस बार मैंने विद्यालय में दो पौधे लगाए हैं।

दादा जी – बहुत अच्छा किया तुमने। पर पौधा लगाना ही **पर्याप्त** नहीं है। पौधों को पानी देना तथा अन्य प्रकार से देखभाल करना भी आवश्यक है। तभी वे वृक्ष बनकर हरियाली ला सकेंगे।

धवल – लेकिन अब तो लोगों में **वृक्षारोपण** के प्रति उत्साह दिखाई देता है।

दादा जी – यह एक शुभ संकेत है। हमें होश तो आया है, पर देर से।

गरिमा – दादा जी! वृक्षों से वातावरण तो शुद्ध बनता ही है, पर इसके अन्य क्या लाभ हैं?

दादा जी – वृक्षों से हमें अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियाँ मिलती हैं। नीम का वृक्ष हमारे बहुत काम आता है। इससे हमें दातुन मिलती है। इसकी पत्तियाँ गरम कपड़ों में रखने पर कीड़े नहीं लगने देतीं। नीम से तेल और साबुन बनता है।

धवल – दादा जी! मैंने कहीं पढ़ा है कि पेड़ों से हमें गोंद भी मिलता है।

दादा जी – हाँ, तुमने ठीक ही पढ़ा है, पर सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि वृक्ष हमें साँस लेने के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन **प्रदान** करते हैं। ये पर्यावरण को शुद्ध बनाते हैं।

धवल – दादा जी! ये वृक्ष पर्यावरण को शुद्ध कैसे बनाते हैं?

दादा जी – तुमने ठीक प्रश्न किया। हम अपनी साँस से कार्बन-डाइऑक्साइड छोड़ते हैं, जो



हानिकारक है। पर ये वृक्ष कार्बन-डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और उसके बदले में हमें ऑक्सीजन देते हैं। इस प्रकार ये प्रकृति में वायु का संतुलन बनाए रखते हैं। जहाँ पेड़ कम होते हैं, वहाँ ऑक्सीजन कम होती है और हमें साँस लेने में कठिनाई होती है।

गरिमा – अब समझ में आया कि वृक्ष हमारे और अन्य जीव-जंतुओं के लिए अत्यंत **उपयोगी** हैं।

दादा जी – एक बात और समझो कि वृक्ष होंगे तो वर्षा भी खूब होगी। जंगल में मंगल हो जाएगा।

क्या सीखा

पेड़-पौधों का महत्व जानना, उनके प्रति प्रेम उत्पन्न करने का प्रयास।



शब्दार्थ (Word Meaning)

विहार	— मनोरंजन के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना	स्वार्थ	— मतलब
कलरब	— पक्षियों की चहचहाहट	वृक्षारोपण	— पेड़ लगाना
उपयोगी	— लाभदायक	विचरण	— घूमना, फिरना
प्रतीत	— महसूस	पर्याप्ति	— काफ़ी
हानिकारक	— नुकसानदायक	हानिकारक	— खतरनाक
समृद्धि	— खुशहाली		
प्रदान	— देना		



अभ्यास



मौखिक

दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए।

- (क) गरिमा कहाँ जाने से डर रही थी?
- (ख) साइबरिया से प्रतिवर्ष कौन-से पक्षी आते हैं?
- (ग) लोग अपने स्वार्थ के लिए किसे काट रहे हैं?
- (घ) जंगल कम क्यों होते चले जा रहे हैं?

लेखनी

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- (क) पक्षी-विहार का वातावरण कैसा होता है?

.....

.....

- (ख) साइबरियन क्रेन की क्या विशेषता है?

.....

.....

- (ग) पक्षियों की किन-किन बातों का अध्ययन किया जाता है?

.....

.....

- (घ) वृक्षारोपण क्यों करना चाहिए?

.....

.....



(ङ) वृक्ष हमारे लिए क्यों उपयोगी हैं?

.....
.....

2. सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए।

(क) पक्षी पानी में क्या कर रहे थे?

(अ) झगड़ा

(ब) कलरव

(स) नाच

(द) सो

(ख) वातावरण किससे शुद्ध बनता है?

(अ) काँटों से

(ब) वृक्षों से

(स) इत्र से

(द) इन सभी से

(ग) वृक्ष पर कैसा जोड़ा बैठा है?

(अ) सफेद पक्षियों का

(ब) काले पक्षियों का

(स) हरियल का

(द) इनमें से कोई नहीं

3. सही कथन के सामने ✓ लगाइए।

(क) पक्षी भी विदेश जाते रहते हैं।

(ख) पक्षियों के पैरों में रबड़ का छल्ला बाँध देते हैं।

(ग) पक्षियों का आना बढ़ गया है।

(घ) वृक्षों से जड़ी-बूटियाँ मिलती हैं।

(ङ) वृक्ष होंगे तो वर्षा भी खूब होगी।

4. श्रुतलेख

स्वार्थ, पर्यावरण, ऑक्सीजन, प्राकृतिक, समृद्धि, अत्यंत, वृक्षारोपण।



जीवन-मूल्य

आप अपने क्षेत्र को हरा-भरा बनाना चाहते हैं। आप सबको पेड़ लगाने के लिए कैसे मनाएँगे?

भाषा-ज्ञान

1. विलोम शब्द लिखिए।

- | | | | | | |
|--------------|---|-------|------------|---|-------|
| (क) सुखद | x | | (ख) अधिक | x | |
| (ग) लंबी | x | | (घ) अनुकूल | x | |
| (ड) पर्याप्त | x | | (च) शुभ | x | |

2. निम्नलिखित शब्दों में उच्चारण के अनुसार अनुस्वार (.) और अनुनासिक (ˇ) चिह्न लगाइए।

- | | | | |
|-----------|----------|----------|-----------|
| (क) मद | (ख) हसी | (ग) चादी | (घ) अगीठी |
| (ड) काच | (च) अगूर | (छ) बदूक | (ज) खासी |
| (झ) सितबर | (ज) आगन | | |

3. दस संयुक्ताक्षर शब्द लिखिए, जो पाठ में न आए हों।

- | | | | |
|-----|-------|-----|-------|
| (क) | | (ख) | |
| (ग) | | (घ) | |
| (ड) | | (च) | |
| (छ) | | (ज) | |
| (झ) | | (ञ) | |

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तित कीजिए।

- | | | | | | |
|-----------|---|-------|-----------|---|-------|
| (क) पिता | - | | (ख) बूढ़ा | - | |
| (ग) बलवती | - | | (घ) नौकर | - | |



- | | | | | | |
|------------|---|-------|-------------|---|-------|
| (ङ) सेवक | - | | (च) श्रीमान | - | |
| (छ) सुनार | - | | (ज) बहन | - | |
| (झ) सेठानी | - | | (ञ) शेर | - | |

5. 'आँ' के उच्चारण वाले पाँच अंग्रेजी शब्द लिखिए।

- | | | | |
|-----|-------|-----|-------|
| (क) | | (ख) | |
| (ग) | | (घ) | |
| (ड) | | | |

6. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

वृक्ष पर्यावरण को शुद्ध बनाते हैं।

वृक्षों से पर्यावरण शुद्ध **बनता है।**

लड़के चित्र बनाते हैं।

हम काम करते हैं।

मन की बात

कक्षा में एक नाटक का आयोजन कीजिए, जिसमें सभी बच्चे अलग-अलग पेड़ बनकर बताएँ कि वे सबके लिए कैसे ज़रूरी हैं?

हँसते-गाते

पेड़ क्यों काटे जा रहे हैं तथा सरकार इसे रोकने के लिए क्या कदम उठा रही है? इंटरनेट से जानकारी इकट्ठी करके एक चार्ट बनाइए।



जल की उपयोगिता

पाठ-प्रवेश

प्रस्तुत पाठ में हमें जल की उपयोगिता के बारे में बताया गया है कि हमें जल का सदुपयोग कैसे करना चाहिए।

आधी छुट्टी के बाद जब हिंदी की अध्यापिका श्रीमती निशा जैन अध्यापक-कक्ष से निकलीं, तो उन्होंने देखा कि कुछ नलों से पानी टपक रहा है। वे समझ गईं कि भोजन करने के बाद बच्चों ने नलों को ठीक से बंद नहीं किया होगा। वे नलों को ठीक से बंद करने के बाद ही कक्ष में गईं।

सभी बच्चों ने खड़े होकर उनका **अभिवादन** किया। उन्होंने सभी को बैठने का संकेत करते हुए कहा— “आज मैं आपको ‘जल के महत्व’ के बारे में बताऊँगी। गरमी के दिनों में जब आपको बहुत प्यास लगती है, तब आप क्या करते हो? फ्रिज से ठंडे पानी की बोतलें ही निकालते हो, न?”

सभी बच्चे ज़ोर-से बोले— “हाँ मैडम, तब हम खूब पानी पीते हैं।”

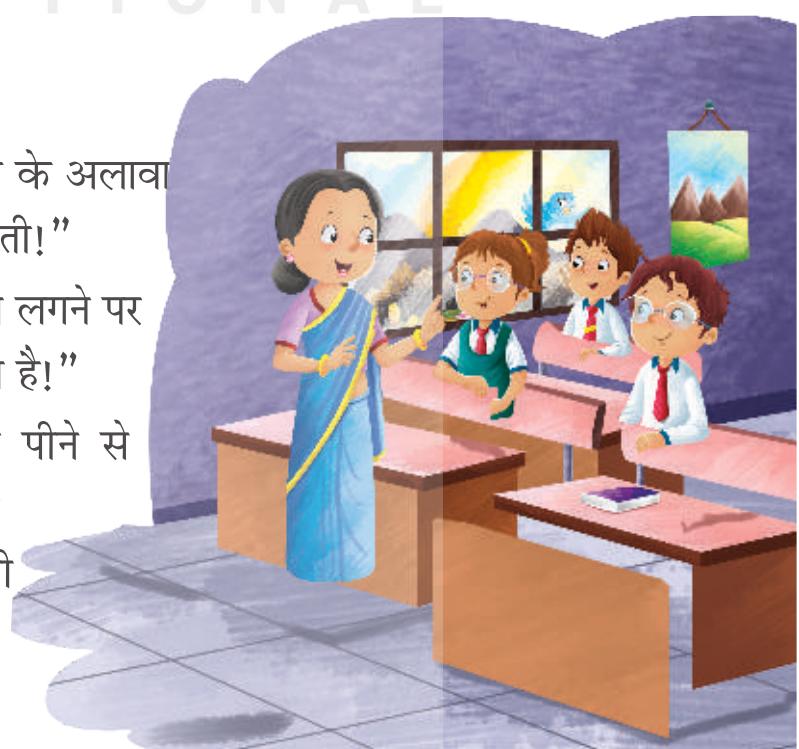
अध्यापिका ने पूछा— “क्यों?”

बच्चे बोले— “क्योंकि हमें प्यास लगती है।”

अध्यापिका बोलीं— “आप सबने ठीक कहा। पानी के अलावा हमारी प्यास किसी और चीज़ से बुझ ही नहीं सकती!”

अध्यापिका की बात सुनकर अर्पित बोला— “प्यास लगने पर मैं तो कोल्ड ड्रिंक पीता हूँ। मेरी प्यास तो बुझ जाती है।”

अध्यापिका बोलीं— “लेकिन कोल्ड ड्रिंक पीने से प्यास अच्छी तरह नहीं बुझती। जब बहुत अधिक प्यास लगती है, तब हम **गटागट** बहुत सारा पानी पी जाते हैं, तब कोल्ड ड्रिंक इतना थोड़े ही पी सकते हैं! प्यास लगने पर तो पानी ही पीने में मज़ा आता है, कोल्ड ड्रिंक पीने में नहीं!”





अध्यापिका की बात सुनकर ज्यादातर बच्चों ने हामी भरी।

अध्यापिका फिर बोलीं— “ज़रा सोचो, प्यास लगने पर अगर आपको पानी न मिले, तो क्या होगा?”

शुभम बोला— “तब तो हम प्यासे मर जाएँगे!” बात के बीच में ही नीरज बोला— “पर पानी क्यों नहीं मिलेगा, मैडम?”

अध्यापिका ने बताया— “भारत की जनसंख्या लगातार बढ़ती जा रही है, जिसके कारण पानी की माँग भी बढ़ती जा रही है। हम नदियों, तालाबों और कुओं से पानी प्राप्त करते हैं, लेकिन उनमें कूड़ा-कचरा डालकर उन्हें गंदा भी कर रहे हैं। गंदे पानी का होना, न होना दोनों बराबर ही हैं।”

“क्यों मैडम?” अनिल ने पूछा।

“भला कोई गंदा पानी पीता है?” रोहित बोला।

इस पर अनिल ने कहा— “लेकिन गंदा पानी पेड़-पौधे में तो डाल सकते हैं, न?”

अध्यापिका ने जवाब दिया— “हम मटमैले पानी को तो पेड़-पौधों में डाल सकते हैं, लेकिन उस पानी को नहीं, जिसमें कारखानों के दूषित पदार्थ मिले होते हैं। इससे तो सारे पेड़-पौधे नष्ट हो जाएँगे!”

अध्यापिका आगे बोलीं— “गरमी के दिनों में नदियों, तालाबों का जो जल सूख जाता है, वह वर्षा के रूप में हमें फिर से मिल जाता है, परंतु

हमारे देश में कभी ज्यादा वर्षा होती है, तो कभी कम। सब जगह एक समान वर्षा नहीं होने के कारण कहीं सूखा पड़ता है, तो कहीं बाढ़ आती है। बाढ़ में वर्षा का **अधिकांश** जल बह जाता है और जान-माल का भी खतरा रहता है। सूखा पड़ने पर लोग बूँद-बूँद को तरस जाते हैं। नहाना-धोना तो दूर, पीने के लिए भी पानी नहीं मिलता... मीलों पैदल चलकर लोगों को पानी लाना पड़ता है... लेकिन हमारे शहरों में, जहाँ पर्याप्त पानी है, वहाँ लोग इसे खूब बरबाद करते हैं। अभी-अभी मैंने खुले नलों को बंद किया है। अगर यों ही पानी टपकता रहा, तो एक दिन हम भी बूँद-बूँद को तरस जाएँगे... लेकिन तब हमारे वश में कुछ नहीं होगा!”

कक्षा में एकदम **सन्नाटा** था। बच्चे ध्यान से अध्यापिका की बातें सुन रहे थे। वे फिर बोलीं—





“अब तो आप समझ ही गए होंगे कि जल कितना मूल्यवान है! ऐसे **बहुमूल्य** जल को **नष्ट** करने का अधिकार किसी को नहीं! अब बताओ कि इसे बचाने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?”

आकृति बोली— “ज़रूरत पूरी हो जाने के बाद नल हमेशा बंद रखेंगे।”

“इसके अलावा?” अध्यापिका ने पूछा।

“पानी का उतना ही प्रयोग करेंगे, जितनी ज़रूरत हो!” रुचि बोली।

“बहुत अच्छा! कुछ और बातों का ध्यान रखो। जब ब्रश करो, तब नल को मत खोलो। जब कुल्ला करो, तभी नल खोलो। इससे बहुत पानी बचता है। नहाते समय शॉवर या फ़्लव्वारा खोलकर मत नहाओ, बालटी और मग का प्रयोग करो; इससे पानी कम खर्च होता है। फ़र्श को पानी से धोने की बजाय, पोंछा मारकर ही साफ़ कर लो। इससे बहुत पानी बचता है। फल-सब्ज़ी धोने के बाद पानी को पेड़-पौधों में डाल दो। इससे पानी बेकार नहीं होगा और पेड़-पौधों को भी लाभ पहुँचेगा। इसी प्रकार, कपड़े धोते, बरतन साफ़ करते और कार, स्कूटर आदि धोते समय अगर थोड़ी-सी सावधानी बरती जाए, तो बहुत सारा जल बचाया जा सकता है।” अध्यापिका ने कहा।

घंटी बजी, तो अध्यापिका फिर बोलीं— “आज से आप सब पानी की बचत एवं उसका उचित उपयोग करना शुरू कर दो, क्योंकि जल ही जीवन है।”

सभी बच्चों ने सिर हिलाकर हामी भरी और भविष्य में जल का सही ढंग से प्रयोग करने का **वचन** दिया।

क्या सीखा



पानी की बचत, जल का उचित ढंग से उपयोग।



शब्दार्थ (Word Meaning)

अभिवादन	— नमस्कार, प्रणाम	गटागट	— शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी
अधिकांश	— ज्यादातर	सन्नाटा	— चुप्पी, खामोशी
बहुमूल्य	— मूल्यवान	नष्ट	— बरबाद
हामी	— स्वीकृति	वचन	— वायदा



अभ्यास

मौखिक

दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए।

- (क) अध्यापिका ने बच्चों को किसके महत्व के विषय में बताया?
- (ख) हम लोग पानी कहाँ से प्राप्त करते हैं?
- (ग) कौन-सा पानी डालने से पेड़-पौधे नष्ट हो जाते हैं?

लेखनी

1. दिए गए प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

- (क) अध्यापक-कक्ष से निकलकर अध्यापिका ने क्या देखा?
-

- (ख) कक्ष में जाने से पहले अध्यापिका ने क्या किया?
-

- (ग) क्या कोल्ड ड्रिंक पीने से हमारी प्यास बुझ जाती है?
-

- (घ) पानी बचाने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?
-

2. सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए।

- (क) अध्यापिका कक्ष में कब गई?

(अ) सुबह

(ब) आधी छुट्टी के बाद

(स) शाम को

(द) दूसरे पीरियड में

- (ख) बच्चों ने क्या बंद नहीं किया था?

(अ) नल

(ब) दरवाजे

(स) पंखे

(द) बल्ब



(ग) किन दिनों अधिक प्यास लगती है?

(अ) जाड़े में

(ब) बरसात में

(स) गरमी में

(द) वसंत में

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए।

जनसंख्या प्यास ज़रूरत बहुमूल्य

(क) गरमी के दिनों में हमें बहुत लगती है।

(ख) भारत की लगातार बढ़ रही है।

(ग) जल को नष्ट करने का अधिकार किसी को नहीं।

(घ) पानी का उतना ही उपयोग करो, जितनी हो।

4. श्रुतलेख

अभिवादन, कोल्ड ड्रिंक, बहुमूल्य, पर्याप्त, सन्नाटा, दूषित।

जीवन-मूल्य

वर्षा के जल का उपयोग हम किस प्रकार कर सकते हैं? पता कीजिए और अपने मित्रों को बताइए।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए।

(क) चिड़िया — (ख) भाषा —

(ग) ऋतु — (घ) माला —

(ड) कपड़ा — (च) भैंस —

2. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहा जाता है। संज्ञा के तीन भेद होते हैं—

व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा।

उदाहरण — व्यक्तिवाचक संज्ञा — ताजमहल के समीप एक पेड़ है।

जातिवाचक संज्ञा — बालक घर के अंदर है।



- वह कुरसी पर बैठकर नाश्ता कर रहा है।
- मोहन, चालाकी न दिखाओ।

भाववाचक संज्ञा

नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों की पहचान संज्ञा के अलग-अलग भेदों के रूप में कीजिए।

कक्षा	नगर	कोलकाता	मिलावट	प्रेम	देवता
विनम्रता	संजय	लंदन	प्रशंसा	चिड़िया	कुरान
चाय	शेर	फूल	ब्रिकी	ब्रह्मा	कन्याकुमारी

- (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा —
- (ख) जातिवाचक संज्ञा —
- (ग) भाववाचक संज्ञा —

3. जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा शब्दों के स्थान पर किया जाता है वे शब्द सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे— मैं, हम, तुम, वह, यह, आप आदि।

दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए।

- (क) वे एक साथ खेलते हैं।
- (ख) आप कब आए?
- (ग) वह कक्षा में प्रथम आता है।
- (घ) यह मेरी पुस्तक है।
- (ङ) तुम क्या कह रहे थे?
- (च) मैं सोने जा रही हूँ।

मन की बात

एक थर्मोकोल शीट पर जल के दुरुपयोग से बचने के उपाय दर्शाइए।

हँसते-गाते

‘जल के उपयोग’ पर एक प्रेजेंटेशन रिपोर्ट बनाइए।



एक बूँद



पाठ-प्रवेश

यह कविता अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिओंध' जी द्वारा रचित है। यह कविता बूँद के माध्यम से हमें यह शिक्षा देती है कि हमारे जीवन में जो भी उतार-चढ़ाव आए, हमें उसकी परवाह न करते हुए अपने लक्ष्य पर नज़र रखनी चाहिए।

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी,
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी?

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में?
या जलूँगी गिर अंगारे पर किसी
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में?

बह गई उस काल एक ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा पड़ी, मोती बनी।

लोग यूँ ही हैं **झिझकते**, सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर का छोड़ना **अकसर** उन्हें
बूँद लौ, कुछ और ही देता है करा।

—अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिओंध'



क्या सीखा



समझदारी का प्रयोग करना, प्रयास करते रहना, आत्मविश्वास।



शब्दार्थ (Word Meaning)

ज्यों	-	जैसे ही
झिझकते	-	संकोच करते

काल	-	समय
अकसर	-	ज्यादातर, प्रायः

अभ्यास



मौखिक

दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए।

- (क) बूँद कहाँ से निकली?
- (ख) बूँद किससे बातें कर रही हैं?
- (ग) ‘एक बूँद’ कविता के रचयिता का नाम क्या है?
- (घ) बूँद ने सीप में जाकर कौन-सा रूप धारण किया?

लेखनी

1. दिए गए प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

- (क) बादलों से निकलने के बाद बूँद के मन में क्या विचार उठे?
-

- (ख) बूँद भगवान से क्या जानना चाहती है?
-



(ग) बूँद मोती कैसे बनी?

.....

(घ) जब किसी मनुष्य को घर छोड़ना पड़ता है, तो उसके मन में क्या विचार आते हैं?

.....

2. कविता की वे पंक्तियाँ लिखिए, जिनसे निम्नलिखित अर्थ प्रकट होते हैं।

(क) बूँद बार-बार यह सोचने लगी कि मैं घर छोड़कर क्यों निकली।

.....

(ख) बूँद सोचती है, अंगारे पर जलूँगी या किसी कमल के फूल पर टपकूँगी।

.....

(ग) बूँद एक सुंदर सीप में गिरकर मोती बन गई।

.....

(घ) घर छोड़ने पर बूँद के समान ही मनुष्य विचलित होता रहता है।

.....

3. सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए।

(क) बूँद कहाँ से निकली थी?

(अ) नदी से



(ब) बादलों से



(स) आसमान से



(द) झील से



(ख) बूँद किस कारण समुद्र की ओर चल पड़ी?

(अ) क्योंकि उस समय उस दिशा की हवा बहने लगी।



(ब) क्योंकि वह मोती बनना चाहती थी।



(स) वह अंगारे पर गिरने से बचना चाहती थी।



(द) उसे समुद्र से लगाव था।





(ग) बूँद कहाँ जाकर गिरी?

(अ) धूल में

(ब) अंगारे पर

(स) सीप में

(द) कमल पर

(घ) बूँद अंत में क्या बन गई?

(अ) अंगारा

(ब) सीप

(स) मोती

(द) भाप

4. श्रुतलेख

बादलों, झिझकते, समंदर, सुंदर, मुँह, बूँद, किंतु।

जीवन-मूल्य

‘बूँद-बूँद से घड़ा भरता है।’ इस मुहावरे का अर्थ व उस पर अपने विचार लिखिए।

भाषा-ज्ञान

1. समानार्थक शब्द लिखिए।

(क) बादल —

(ख) आसमान —

(ग) फूल —

(घ) हवा —

(ङ) घर —

(च) कमल —

(छ) भाग्य —

(ज) समुद्र —

2. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

जैसे— ‘सुंदर सीप’ में ‘सुंदर’ शब्द ‘सीप’ की विशेषता बता रहा है। अतः ‘सुंदर’ शब्द विशेषण है। यहाँ ‘सीप’ की विशेषता बताई जा रही है। अतः ‘सीप’ शब्द विशेष्य है।

अब नीचे लिखे विशेष्यों के लिए उचित विशेषण लिखिए।

(क) — गाय

(ख) — आसमान



for online use only

- | | | | |
|-----------|---------|-----------|--------|
| (ग) | - देन | (घ) | - हवा |
| (ङ) | - चेहरा | (च) | - मोती |

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।

- | | |
|------------------------------------|-------|
| (क) मेरे परीक्षा समाप्त हो गए हैं। | |
| (ख) मेरी चाय में कोई गिर गया है। | |
| (ग) खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ। | |
| (घ) मेरे को खाना नहीं खाना। | |

मन की बात

मोती कैसे बनता है, अपने अध्यापक या अध्यापिका से इसके विषय में जानिए।

हँसते-गाते

किसी ऐसे महापुरुष के बारे में लिखिए, जिन्हें अपना घर छोड़कर ही लक्ष्य की प्राप्ति हुई। उनका चित्र भी अपनी पुस्तिका में चिपकाइए।

नाम:



for online use only

વડोदरा

વડोदરा ગુજરાત રાજ્ય કા તીસરા સબસે અધિક જનસંખ્યા વાળા એક મહત્વપૂર્ણ શહર હૈ। યાં એક ઐસા શહર હૈ, જહાં 'મહારાજા સયાજીરાવ વિશ્વવિદ્યાલય' અપને સુંદર સ્થાપત્ય કે લિએ જાના જાતા હૈ। યાં શહર અહમદાબાદ કે દક્ષિણ-પૂર્વ મં વિશ્વામિત્રી નદી કે તટ પર સ્થિત હૈ। વડોદરા કો 'બડોદા' ભી કહતે હૈનું।

વડોદરા જિલ્લા 7,788 વર્ગ કિ.મી. મં ફેલા હુઅ હૈ, જો નર્મદા નદી (દક્ષિણ) સે માહી નદી (ઉત્તર) તક વિસ્તૃત હૈ। કપાસ, તંબાકૂ તથા એરંડ કી ફલિયાં યહાઁ કી નકદી ફ્રસલેં હૈનું। સ્થાનીય ઉપયોગ ઔર નિર્યાત કે લિએ ગેહું, દલહન, મકકા, ચાવલ તથા બાગાની ફ્રસલેં ઉગાઈ જાતી હૈનું।

શહર મં ઉત્પાદિત હોને વાલી વિભિન્ન પ્રકાર કી વસ્તુઓં મં સૂતી વસ્ત્ર તથા હથકરઘા વસ્ત્ર, રસાયન, દિયાસલાઈ, મશીનેં ઔર ફર્નિચર શામિલ હૈનું।

ઇસ શહર કા એક પ્રમુખ સ્થાન બડોદા સંગ્રહાલય ઔર ચિત્ર દીર્ઘા હૈ, જિસકી સ્થાપના બડોદા કે મહારાજા ગાયકવાડાને 1894 મં ઉત્કૃષ્ટ કલાકૃતિયોં કે પ્રતિનિધિ સંગ્રહ કે રૂપ મં કી થી। ઇસકે ભવન કા નિર્માણ 1908 સે 1914 કે બીચ હુઅ ઔર ઔપચારિક રૂપ સે 1921 મં દીર્ઘા કા ઉદ્ઘાટન હુઅ। ઇસ સંગ્રહાલય મં યૂરોપીય ચિત્ર, વિશેષકર જોર્જ રોમને કે ઇંગ્લિશ રૂપચિત્ર, સર જોશુઆ રેનોલ્ડ્સ તથા સર પીટર લેલી કી શૈલિયોં કી કૃતિયાં ઔર ભારતીય પુસ્તક ચિત્ર, મૂર્તિશિલ્પ, લોક કલા, વैજ્ઞાનિક વસ્તુએં વ માનવ જાતિ કે વર્ણન સે સંબંધિત વસ્તુએં પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈનું। યહાઁ ઇતાલવી, સ્પેનિશ, ડચ ઔર ફ્લેમિશ કલાકારોં કી કૃતિયાં ભી રખી ગઈ હૈનું।

ઇસકે અતિરિક્ત લક્ષ્મી વિલાસ પૈલેસ, સયાજી ઉદ્યાન, નજારબાગ પૈલેસ, સુરસાગર ઝીલ, જરવાની ઝરના આદિ યહાઁ મુખ્ય પર્યાટન સ્થળ હૈનું।

